ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI:UPBIL04292, REG. No.: 561/2013-2014 Vol.-2, No.-2, PP-311-314,YEAR-2015

आचार्य केशवदास की काव्यकृतिया

❑ डॉ0 मुहम्मद अख़लाक

प्रस्तावना – *केशवदास आचार्य पहले और कवि बाद में थे। काव्य के क्षेत्र में सिद्धांत संबंधी जितनी मान्यताएं उनके समय पर स्थापित हुईं, उन सभी में केशव ने अपनी व्यवस्थाएं दी हैं। यह कहना कदापि गलत न होगा कि हिन्दी रीतिकाल की दृष्टि से रीतिकाव्य को केशव का अवदान मौलिक और महत्वपूर्ण हैं। संस्कृत तथा हिन्दी के प्राचीन कवियों की भांति केशव की कृतियों की संख्या निर्धारण के बारे में विद्वानों में मतभेद है। साहित्य के इतिहास का अध्ययन करने पर ऐसा लगता है कि केशवदास की कतिपय कृतियों पर विद्वानों में मतभेद हैं।*

विभिन्न विद्वानों, के मत के हिसाब से केशव के ग्रंथ 'सरोज' कार शिवसिंह अपने ग्रंथ में केशव की रचनाओं की भी प्रामाणिकता की छानबीन करते हुए उनके पाँच ग्रंथों का उल्लेख किया है।

1. रसिक प्रिया
2. रामचंद्रिका
3. कवि प्रिया
4. विज्ञान गीता
5. रामालंकृत मंजरी

उपरोक्त मत को बाद में अनेक देशी–विदेशी हिन्दी मर्मज्ञों का समर्थन प्राप्त है। जिसमें प्रमुख विद्वान हैं :– सूर्यकांत शास्त्री2 , खड्ग सिंह3, एवं मिस्टर के वहीं दूसरी ओर 'मिश्रबंधुओं' ने अपनी महत्वपूर्ण कृति 'मिश्रबंधु विनोद' में केशवदास रचित सात काव्य कृतियों का उल्लेख किया है।

(1) रासिक प्रिया, (2) रामचंद्रिका, (3) कवि प्रिया, (4) विज्ञान गीता, (5) रतन बावनी, (6) वीर सिंह देव चरित्र, (7) नखशिखए रतन बावनी' तथा 'नखशिख' के विषय में मिश्रबंधुओं ने लिखा है कि उन्हें यह ग्रंथ दृष्टिगोचर न हो सके। नखशिख रचनाएं मिश्रबंधुओं की दृष्टि में भी संदिग्ध हैं। आचार्य रामचंद शुक्ल तथा गौरी शंकर द्विवेदी ने 'नख शिख' कृति को छोड़कर शेष कृतियों की प्रामाणिकता को स्वीकार किया है। केशव पर अधिकारी विद्वान गणेश प्रसाद द्विवेदी 'नखशिख' को केशव की ही रचना स्वीकार करते हैं। डॉ0 रामकुमार वर्मा ने भी 'नखशिख' को केशव की ही काव्य कृति होने पर संदेह किया है। उन्होंने अपनी मौलिक सूझबूझ से 'विज्ञान गीता', 'रतन बावली', 'जहांगीर जस चंद्रिका', 'वीर सिंह देव चरित', 'रसिक प्रिया', 'कवि प्रिया' तथा 'रामचंद्रिका', 'नाम्नी' सात काव्य कृतियों को केशव की कृति स्वीकारा है। डा0 राम रतन भटनागर ने केशव की कृतियों के संबंध में डा0 राम कुमार वर्मा के मत का समर्थन किया। उनका कहना है कि केशव के सात ही ग्रंथ प्रसिद्ध हैं और इनमें उन्होंने जिस काव्य कृतियों की चर्चा की है वे विज्ञान गीता, रतन बावनी, जहांगीर जस चंद्रिका, वीर सिंह देव चरित्र, रसिक प्रिया, कवि प्रिया और रामचंद्रिका हैं। कृष्ण शंकर शुक्ल ने अपनी पुस्तक 'केशव काव्य कला' में उनके सात ग्रन्थों का उल्लेख किया है :– (1) रामचंद्रिका, (2) कवि प्रिया, (3) रासिक प्रिया, (4) विज्ञान गीता, (5) रतन बावनी, (6) वीर सिंह देव चरित्र एवं (7) जहांगीर जस चंद्रिका।

जहां तक केशव की कृतियों की प्रामाणिकता एक गंभीर शोध का विषय है। नागरी प्रसारिणी सभी ने उस दिशा में बड़ा सूक्ष्म व उल्लेखनीय काम किया है। सभा की खोज रिपोर्ट के अनुसार केशव, केशवराय, केशव कवि, केशवदास और केशव गिरि नामों से

एसोसिएट प्रोफेसर– हिन्दी विभाग, रामसहाय राजकीय महाविद्यालय, शिवराजपुर, कानपुर (उ0प्र0) भारत

चौदह काव्य कृतियों का पता चलता है, जो परिचय इस प्रकार हैं।

क्र. सं० ग्रंथ का नाम	ग्रन्थकार का नाम	प्राप्ति स्थान	खोज का समय	ग्रंथ की छंद संख्या
1. रसिक प्रिया	केशव मिश्र	पुस्तकालय महाराज बनारस	सन् 1900 ई०	1620
2. नखशिख	केशव मिश्र	पुस्तकालय महाराज बनारस	सन् 1903 ई०	300
3. कवि प्रिया	केशव मिश्र	कृष्ण बल्देव वर्मा कसर बाग, लखनऊ	सन् 1903 ई०	1140
4. रामचन्द्रिका	केशव मिश्र	पुस्तकालय महाराज बनारस	सन् 1903 ई०	3410
5. वीरसिंह देवचरित्र	केशव मिश्र	राजकीय पुस्तकालय दतिया	सन् 1903 ई०	
6. रतनबावनी	केशव मिश्र	बा० बालकृष्ण बल्देव वर्मा कैसरबाग लखनऊ	सन् 1900 ई०	350
7. विज्ञान गीता	केशव मिश्र	पुस्तकालय महाराज बनारस	सन् 1900 ई०	1487
8. जहांगीर जसचंद्रिका	केशव मिश्र	पुस्तकालय महाराज बनारस	सन् 1917 ई०	450
9. जै० मुनि कथा	केशव मिश्र	ला० नंदलाल मुसद्दी कंधरा, छतरपुर	सन् 1919 ई०	3565
10. हनुमान जन्म लीला	केशव कवि	पं० नन्नूप्रताप तिवारी चुनार	सन् 1910 ई०	500
11. बाल चरित्र	केशव कवि	पं० नन्नूप्रताप तिवारी चुनार	सन् 1911 ई०	62
12. आनन्द लहरी	केशव राय	पं० रघुनाथ, नायघाट बनारस	सन् 1911 ई०	210
13. रस ललित	केशव राय	पं० शिव दूबे, हुसैनगंज, फतेहपुर	सन् 1911 ई०	877
14. कृष्ण लीला	केशव कृपाहार	पं० शिवप्रसाद मिश्रा मौजा, नबाद फतेहपुर	सन् 1911 ई०	648

प्रतिनिधि काव्य कृतियों का संक्षिप्त परिचय

1. रसिक प्रिया– जनश्रति को अगर प्रामाणिक न माना जाए तब भी इतने अंतः साक्ष्य प्रमाण सुलभ हैं जो रासिक प्रिया का केशव की कृति होना सर्वग्राभावेद सिद्ध करते हैं। कृति में इस बात का स्पष्ट उल्लेख है कि कवि केशवदास ने उनकी रचना ओरछा नरेश महाराज मधुकर सिंह के पुत्र कुंवर इंद्रजीत सिंह की कृपा कोर से की थी।10 इसकी रचना रामचंद्रिका की रचना के 10 वर्ष पूर्व संवत 1942 में हो चुकी थी।11 इस रचना में कृत 16 प्रकाश है। प्रथम प्रकाश में मंगलाचरण, ग्रंथ रचना उद्देश्य तथा उसका रचनाकाल बताते हुए श्रृंगार के दोनों पक्षों का उल्लेख किया गया है। द्वितीय प्रकाश में नायक भेद तथा तीसरे में जाति, कर्म, मान और व्यवस्था के अनुसार नायिका का वर्णन किया गया है। चौथे प्रकाश में दर्शन के चार भेद और पांचवें में नायक–नायिका की चेष्ठाओं तथा दूत–दूती अभिसार का वर्णन है। छठा प्रकाश विभावनानुभाव संचारी एवं कायिक सालिक भावों से पूर्ण है। सातवें प्रकाश में काल तथा गुणानुकूल नायिका भेद चित्रण है। आठवें प्रकाश में वियोग श्रृंगार के तीन विरह विगर्हित नाना दशाएं वर्णित हैं। नवें प्रकाश में मान भेद तथा दसवें में मान मोचन के रीति की व्याख्या की गई है। ग्यारवें प्रकाश में पूर्वानुराग से आगे की विरह दशाओं का वर्णन है। बारहवें में सखी भेद तथा तेरहवें में सखि जन कर्म–वर्णित किया गया है। पंद्रहवें में वृत्ति वर्णन की प्रमुखता है और सोलहवें व अंतिम प्रकाश में काव्य दोष चित्रित किया गया है।

अति रति गति मति एक करि, विविश्च विविध विलास।
रसिकन को रजिक–प्रिया, कीन्हीं केशव दास।

2. नख सिख– इस छोटी काव्य कृति में केशव ने राधा को विषय बना कर अंग–प्रत्यंगो का कमनीय वर्णय किया है और कवि परंपरा में मान्य अंगों के प्रसिद्ध उपमानों का दोहा छंद में सुन्दर चित्रण किया है,

"कही जो पूरब, पंडवानि ताकी जितनी जानि।
जितनी कविता अंग की उपमा कहों नखानि।।

3. रामचंद्रिका– हिन्दी काव्य में केशव की ख्याति का प्रथम, काव्य ग्रंथ रामचंद्रिका ही है। केशव दास ने उस ग्रंथ की रचना सवृत 1658 में की। इस कृति मे रामकथा की काव्यमद प्रस्तुति है। केशवदास रामचंद्रिका को महाकाव्य के रूप में रखना चाहते थे। 'रामचंद्रिका' में वर्णनों की भरमार है। छंदों की विभिन्नता है, जिसके कारण उसमें महाकाव्य की आत्मा शांति से स्थापित न हो सकी। वैसे रामचंद्रिका की गणना प्रबन्ध काव्यों के अंतर्गत ही होती है। इसमें भाषा के विविध रूप देखने को मिलते हैं। रचना अलकारों से बोझिल है। छंद प्रयोग की दृष्टि से यह आजायबघर प्रतीत होती है। अनेकों आलोचकों तो इन्हीं कारणों से इसे लक्षण ग्रंथ भी कहने के पक्ष में हैं। राम कथा संबंधी ग्रंथ होने के कारण इसका महत्त्व भक्ति और धार्मिकता से भी है। कवि ग्रथांत में कहता है–

अशेष पुण्य पाप कलाप आपने बहाय।
विदेा राज ज्यों, सदेह, भक्त राम को कहाय।।

लहै सुभुक्ति लोक–लोक अंत मुक्त होहि ताहि।
कहें सुनै पदै गुनै जु रामचंद चंद्रिकहि।।चना संवत 1658 विक्रमी है। कवि ने लिखा है।

प्रकट पंचमी को भयो, कवि प्रिया अवतार।
सोरह सौ अट्नवों फागुन सुदि बुधवार।।
कवि प्रिया एक अलंकार ग्रंथ है। इसमें केशवदास ने काव्य शिक्षा की योजना की हैं।
सगुन पदार्थ अर्थ युक्त, सुबरन मय सूखराज।
कण्ठमाल जिमि कवि प्रिया, कंठ करौ कविराज।।

कवि प्रिया का वर्णन 16 प्रभावों में बंटा है। प्रथम प्रभाव में ओरछा के राजवंश का काव्यमय उल्लेख है, दूसरे प्रभाव में कवि का वंश परिचय है। तीसरे प्रभाव में काव्य दोषों का उल्लेख है। चौथे प्रभाव में श्रृंगार के सोलह, भेद, कवि रीति तथा कवि भेद का चित्रण है। पांचवे प्रकाश में कवियों की मान्य परिपाटी में, वर्णलंकार के सहारे में नाना रंग की वस्तुएं वर्णित हैं, छठे प्रभाव में विविध गुण तथा आकृति वाली वस्तुओं की चर्चा है। सातवें प्रभाव में वसुन्धरों में आकृति वैभव की गाथा है। आठवें प्रभाव में राज श्री, रथ, राजोचित वस्तुए वर्णित हैं। नवें प्रभाव सें पंद्रहवे प्रभाव तक अलंकारों के भेद, उपभेद वर्णित हैं। सोलवें प्रभाव में चित्रालंकार की चर्चा है। इस वृत्ति में अलंकारों का, दोहा, छंद में और उदाहरण कवित्त सवैया छंदों में दिए गए है। वस्तुतः यह काव्य कृति केशव के आचार्यत्व को महिमा मंडित करती हैं। यह केशव की पहली पसंद है :

सुबरन जरित पदावृनि, भूषन भूषित गोमान।
कवि – प्रिया है कवि प्रिया, कवि की जीवन प्रान।।

5. वीर सिंह देव चरित– केशव दास की 'रामचंद्रिका' की प्रबंधहीनता को लेकर जो बात विद्वान कहा करते रहे हैं, वीर सिंह चरित उसका परिहार करता है। यह एक अच्छा प्रंबध काव्य है। इसकी रचना केशवदास ने संवंत 1664 विक्रमी में है।

"सम्बत् सोलह से तैसठा। बीति गये प्रकटे चौंसठा।।
अनल नाम सम्बत सर लाग्यो। भाज्यों दुःख सब सुख जगमग्यो।
ऋतु बसन्त है स्वच्छ विचार। सिद्धि योग मिति बसु बुधवार।।
सुकुल पच्छ कवि केशवदास। कौन्हों वीर चरित प्रकाश।।

इस ग्रंथ की समूची विषय वस्तु संवाद द्वारा सुनियोजित है। दान और लोक दोनों अपनी–अपनी महत्तवा प्रतिपादित करते है। इसमें वीर सिंह देव के पराक्रम, ऐश्वर्य और उनसे संबंध रखने वाली सारी कथावास्तु संवाद द्वारा अभिव्यक्त हुई है।

6. रतन बावनी– रतन बावनी की रचना ओरछा नरेश मधुकर शाह के पुत्र रतनसेन के शौर्य पर कंद्रित है। एक साहसी, शूर वीर, संकल्पी, दृढ़ी राजकुमार की जीवन की गौरव गाथा काव्य के 52 छन्दों में अभिव्यक्त हुई है। कृति वीर काव्य की मान्य डिंगल कविता शैली में हुई है। चारण कालिन कवियों के भांति केशव भी यहां छप्पय छंदों का प्रयोग किया है। इस कृति की महत्ता इस दृष्टि से भी है कि हिन्दी कविता श्रृंगार से भीगी थी तब ओज के कवि के रूप में केशव ने वीर रस के सन्नाटे को बहादुरी में तोड़ा।

7. विज्ञान गीता– विज्ञान गीता केशव की दर्शन परक ग्रंथ है। दर्शन के अंतर्गत प्राय उल्लेखों के आधार पर यह कह सकते हैं कि विज्ञान गीता की रचना के प्रेरक वीर सिंह देव थे। इस वीर काव्य में प्रभावों की संख्या–21 है। ऐसा प्रतीत होता है कि केशवदास संस्कृत के प्रसिद्ध रूपक 'प्रबोध चंद्रिका' प्रभावित से है। यह ग्रंथ एक रूप है जिसमें महामोह और विवेक दो राजा है। मिथ्या दृष्टि महामोह की रानी है और द्वराशा, चिंता–निंदा तृष्णा यादि उसकी दासियां हैं। क्रोध, काम आदि सेनापति व परामर्शदाता है। अलस्य और कपट योद्धा एवं छल–कपट दूत है। दूसरे पक्ष में विवेक राजा की पटरानी बुद्धि है। करूणा, श्रृद्धा आदि नारियां हैं। दान, द्वेश, अनुराग, राम, दाम, संतोष आदि इसके नातेदार है। जिसका सत्संग और राजधर्म विवेक राज के मंत्री हैं। धैर्य इसका दूत है। ग्रंथ का संदेश उच्च है, छद्म को छोड़कर सत्य को ग्रहों और राम का नाम लेकर अपने अनुष्ठान में लग जाओं बस चित शुद्ध हो गया। मुक्ति

मिल गई। मोह जाता रहा, बोध हो गया। कुछ भी करो, विवेक साथ है। वंश का डर नहीं है, विज्ञान गीता का मर्म।

8. जहांगीर जस चंद्रिका– रत्नसेन और जहांगीर की दोस्ती इतिहास सिद्ध है। केशव एक दरबारी कवि थे। उन्हें राजा रत्नसेन की अनुकंपा हासिल थी। इसी मैत्री को बल प्रदान करने हेतु केशव ने जहांगीर जस चंद्रिका की रचना की। वीर सिंह देवा 'चरित्र' रूपा की शैली में भी जहांगीर जस चंद्रिका की रचना हुई है। इसका रचनाकाल 1669 है।

सोरह से उनहत्तरा माघ मास, विचार।
जहांगीर सक साहिकी करी चंद्रिका चारू।।

रचना का उद्देश्य बादशाह जहांगीर का यशोगान था। इसे खण्ड काव्य की श्रेणी में रखा जायेगा। कुछ विद्वान अपनी समीक्षात्मक दृष्टि से इसे संघात काव्य अथवा 'लघु काव्य' भी कहते है।

आचार्य कवि केशव की उपरोक्त कृतियों के विश्लेषणोंपरांत मुझे यह कहने में कदापि संकोच नहीं कि केशव ने अपने समय के पूर्व की सभी काव्य–पद्यतियों एवं काव्य शैलियों का अनुसरण किया। विविध मनोभूमि वालें रसिकों हेतु केशव के पास कविता मौजूद है। वे रचनाओं में हतिहास, धर्म, राजनीति, समाज, नीति दर्शन आदि का परिपाक करने वाले आचार्य और सिद्ध हस्त कवि है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सरोज/शिव सिंह सरोज/पृष्ठ–386.
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास/सूर्यकांत नागरी प्रचारिणी। पत्रिका/भाग–11/पृष्ठ–165.
4. History of Hindi Literature/Mr- K/ Page-37.
5. मिश्रबंधु विनोद/मिश्रबंधु।
6. हिन्दी के कवि भाग–1 और काव्य, भाग–1/गणेश प्रसाद द्विवेदी।
7. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास/डॉ राम कुमार वर्मा/पृष्ठ–529.
8. केशवदास/डॉ0 रामरतन भट्नागर/पृष्ठ–10.
9. केशव की काव्य कला/कृष्ण शंकर शुक्ल/पृष्ठ–8.
10. रसिक प्रिया/केशव दास/छंद–संरचना–7–8/पृष्ठ–12.
11. केशवदास/डॉ0 रामरतन भट्नागर/पृष्ठ–12.
12. रसिक प्रिया/केशवदास/पृष्ठ–11.
13. कवि प्रिया सटीक/सरदार/पृष्ठ–16.
14. रामचन्द्रिका/केशवदास।
15. कवि प्रिया/केशवदास/पृष्ठ–3.
16. कवि प्रिया/केशवदास/पृष्ठ–19.
17. कवि प्रिया/केशवदास/पृष्ठ–88.
18. वीर सिंह देव चरित/केशवदास/पृष्ठ–2.
19. विज्ञान गीता/केशवदास/पृष्ठ–87.
20. जहांगीर जस चन्द्रकिा/केशवदास/पृष्ठ–1.
21. केशवदास/चंद्रबली पाण्डेय/पृष्ठ–90.

*****